

सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2025 का चतुर्थ अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। यह अंक नव संवत्सर विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इसमें सर्वप्रथम महामण्डलेश्वर स्वामी महेश्वरानन्दपुरीजी द्वारा लिखित YOGA SUTRAS OF PATANJALI शोध लेख में पातंजलयोगसूत्र के प्रतिपाद्य की आधुनिक सन्दर्भ में उपयोगिता दर्शायी गयी है। जयप्रकाश शर्मा द्वारा प्रस्तुत पंडित सरयूप्रसाद द्विवेदी लिखित 'नव संवत्सर' लेख ममें नव संवत्सर चक्र को स्पष्ट किया है। महान् ज्योतिषाचार्य एवं तन्त्राचार्य पण्डित श्री सरयूप्रसाद जी एक बहुत ही बड़े विद्वान् थे। श्री सरयूप्रसाद द्विवेदी जी भगवान् शिव तथा चण्डिका व दुर्गादेवी के अनन्य उपासक थे। पंडित द्विवेदी जी ने अपने जीवन काल में बहुत से ग्रन्थों की रचना की। उनमें संग्रह शिरोमणि, समाचार प्रकारा, वर्ण बीज प्रकाश, सप्तशतीसर्वस्वम्, मातृका स्तुति, पादुका पेन्चकर, सर्वार्थकल्पद्रुम, परशुराम सूत्रवृत्ति, साधक सर्वस्वम्, दीक्षापद्धति, ललितासहस्रनामवृत्ति, तथा आगम रहस्य प्रमुख है। पण्डित सरयूप्रसाद द्विवेदी जी जयपुर के महाराजाधिराज श्री सवाई रामसिंह के आश्रय में कई वर्ष रहे तथा ग्रन्थों की रचना की। इनका एक पुत्र था जिनका नाम दुर्गाप्रसाद द्विवेदी था। वर्तमान में गणगौरी बाजार जयपुर में स्थित सरस्वती भवन में द्विवेदी जी निवास करते थे तथा इसी के स्थित श्री वीरेश्वर भवन में रहने वाले श्री वीरेश्वर शास्त्री जी इनके शिष्य थे। प्रस्तुत लेख पण्डित सरयूप्रसाद द्विवेदी जी के प्रसिद्ध ज्योतिष ग्रन्थ 'संग्रह शिरोमार्ग' से उद्धृत है। इस लेख में द्विवेदी जी ने संवत्सर पर विस्तार पूर्वक वर्णन किया है। संवत्सरों के प्रकार, उनके नाम, उनमें होने वाले लाभ-हानि, प्रत्येक संवत्सर में मिलने वाले शुभ-अशुभ फल का वर्णन है। इसके साथ ही अयन, ऋतु, मास का उल्लेख करते हुए उनके स्वामी के नाम का भी उल्लेख किया है। साथ ही अधिमास तथा क्षयमास न तिथिचक्र, सारिणी को भी दर्शाया है।

अन्त में स्व. डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के 'राष्ट्रोपनिषत्' के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरुशिष्यपरम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा